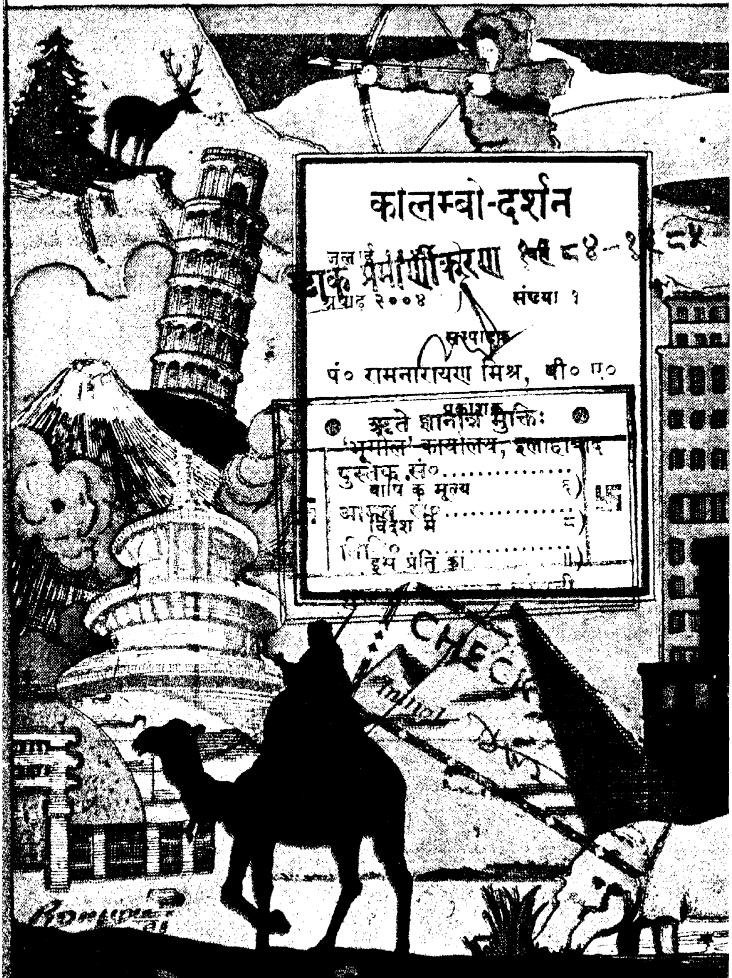
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—६०



कालम्बो-दर्शन

जुलाई

आषाढ़ २००४ संख्या १

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल' कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य ६)

विदेश में ८)

इस प्रति का ॥)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

(शेष कवर के तीसरे पृष्ट पर)

स्थिति

स्थिति, सीमा, तथा विस्तार

कोलम्बो लंका की राजधानी है। लंका को अंग्रेजी भाषा में सीलोन कहते हैं, प्राचीन काल में इसे सिंहल-द्वीप कहा करते थे। यहां के आदि निवासी सिंहाली हैं। कोलम्बो नगर तथा बन्दरगाह लंका के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह बन्दरगाह कन्या कुमारी से लगभग १४० मील दक्षिण-पूर्व लंका तट पर स्थित है। मद्रास से कोलम्बो की दूरी सीधी रेखा में २७५ मील है। पर लंका तथा भारत के बीच छोटे छोटे द्वीपों के कारण जहाज़ सीधे नहीं जा सकते हैं। इस कारण जहाजों को चक्कर काट कर जाना पड़ता है।

यूं तो कालीमीर अंतरीप (मद्रास तट) से लंका का उत्तरी तटीय द्वीप जाफना केवल ५० मील दूर है पर छोटे द्वीपों तथा समुद्र के कम गहरे होने के कारण जहाजों को आने जाने में खतरा रहता है। इस संबन्ध में यह बात ध्यान रखने की है कि पौराणिक काल में मर्यादा पुरुषोत्तम महाराज श्री रामचन्द्र जी रावण पर विजय पाने के लिये लंका गये थे। सेना के उतारने के

लिये उन्होंने नल और नील बन्दरों की सहायता से भारत और लंका के मध्य सेतु बंधवाया था। इसी सेतु या पुल के टूटे-फूटे भाग चारों ओर बिखरे हैं जो छोटे छोटे द्वीपों के रूप में हैं। इन्होंने जहाजों का मार्ग नष्ट कर रक्खा है। मुसलमान लोग इस राम-सेतु को आदम का पुल कहते हैं।

कोलम्बो बन्दरगाह कलकत्ते से १२५६ मील, मद्रास से चक्करदार मार्ग से ६०० मील, बम्बई से ८३० मील और कराची से १२०० मील की दूरी पर स्थित है। यहां पर जहाज कोयला-पानी लेते हैं। संसार के विभिन्न भागों के जहाजी मार्ग में स्थित होने के कारण यह बन्दरगाह अन्तर्राष्ट्रीय बन गया है और यहां से व्यापारिक सामान का परिवर्तन हुआ करता है। व्यापारिक, सामुद्रिक तथा सामरिक दृष्टि से इसकी स्थिति बड़ी महत्व पूर्ण है। इसी कारण यह बन्दरगाह संसार के प्रसिद्ध बन्दरगाहों में गिना जाता है। यह अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा भी बन गया है। गत महायुद्ध ने इसकी महत्ता और भी अधिक बढ़ा दी है। जापानियों ने इसे अपना

अड्डा बनाने के ध्यान से ही इस पर हवाई आक्रमण किया था।

कोलम्बो के समीप कोयला अधिक दिखलाई पड़ता है। आम के वृक्ष तथा बाग़ भी बहुत हैं शायद इसी कारण ही इसका नाम कोल+अम्बो अर्थात् कोलम्बो पड़ा हो। पुर्त्तगाली लोग कोलम्बस की स्मृति में इसे कोलम्बो कहने लगे।

भारत के कुमारी अंतरीप, तुतकुड़ी, रामेश्वरम् तिरु अनन्तपुरम् आदि तटीय स्थान कोलम्बो के निकटतम भारतीय स्थान हैं। कोलम्बो नगर बौद्ध-धर्म का केन्द्र माना जाता है। इस सम्बन्ध में हमें भारत के प्राचीन इतिहास की याद आती है जब कि महाराज अशोक वर्धन ने ईसा से लगभग ढाई सौ वर्ष पूर्व अपने भिक्षु-भिक्षुणियों को लंका में बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिये भेजे थे। यही का कारण है कि लंका बौद्ध-धर्म का केन्द्र बन गया। योरुपीय जातियों ने व्यापार के ध्यान से लंका में अपने अपने उपनिवेश बसाये थे जिनमें, पुर्त-गाली, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज मुख्य हैं। काल के गाळ में धीरे धीरे सभी चले गये अब अंग्रेज शेष रह गये हैं इनकी स्वाधीनता प्रदान करने के लिये प्रभुत्व द्वीप

पर अब भी जमा है। इन जातियों के आने से कोलम्बो को एक लाभ अवश्य ही हुआ है कि वह आधुनिक संस्कृत का भी केन्द्र बन गया है।

कोलम्बो

सीलोन अथवा लंका द्वीप ५'५६ और ९'५१ उत्तरी अक्षांश तथा ७९'३६ और ८१'५३ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। इस द्वीप की अधिक से अधिक लम्बाई २६७ मील और अधिक से अधिक चौड़ाई १४० मील है। सड़क से इसका चक्कर लगाने में ७५० मील की यात्रा करनी पड़ती है।

इस द्वीप का क्षेत्रफल २४,७०० वर्गमील है। यह द्वीप भारतवर्ष के ठीक दक्षिण कुमारी अंतरीप के आगे स्थित है। सचमुच यह भारतवर्ष का एक अंग है पर अंग्रेज़ों ने अपनी कटु विभाजन नीति के अनुसार इसे भारत से अलग कर दिया है। इस द्वीप का सर्वोच्च पर्वत पिदुरुतलागल है। पर्वत की सबसे ऊँची चोटी नुवर इलिया है जो ८,२६७ फुट ऊँची है। यहां की सबसे लम्बी नदी महावली गंगा है।

कोलम्बो-दर्शन

कोलम्बो का नगर तथा बन्दरगाह लंका द्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह नगर ६´५६ उत्तरी अक्षांश तथा ७६´५० देशान्तर पर बसा है।

संक्षिप्त इतिहास

लंका द्वीप का इतिहास ठीक ठीक अज्ञात सा है। यद्यपि भारतवासी लंका द्वीप के नाम से भली भांति परिचित है और जानते हैं कि रावण लंका का राजा था। महाराज श्री रामचन्द्र के समय में लंका में निशाचरों की बस्ती थी। रावण ने सीता हरण किया था उसी पर महाराज रामचन्द्र ने लंका विजय की थी। लंका और भारत के बीच के समुद्र में पुल बनाया गया था जो आज भी आदम का पुल या रामचन्द्र के पुल के नाम से प्रसिद्ध है।

ऐतिहासिक पुस्तकों में सिंहाली राजों का वर्णन ५४३ वर्ष ईसा के पूर्व तक मिलता है ५४३ वर्ष ईसा के पूर्व से १८१५ ई० के मध्य १६० सिंहाली राजों ने लंका में शासन किया। १८१५ ई० में लंका के अंतिम सिंहाली शासक को अंग्रेज़ों ने गद्दी से उतारा था।

सन् १५०५ ई० में सर्व प्रथम पुर्तगाली द्वीप में आये थे। १५१७ ई० में वे अपना जहाजी बेड़ा लेकर पहुँचे और तट पर अधिकार जमाया और कोलम्बो की क़िले बन्दी आरम्भ किया।

१४१ वर्ष तक पुर्तगालियों का उपनिवेश लंका में रहा उसके पश्चात् १६३८ ई० में डच (हालैंड निवासी) आये और १६५६ ई० में कोलम्बो पर अधिकार कर लिया। १६५६ ई० में डच लोगों ने पुर्तगालियों को लंका से मार भगाया।

१३८ वर्ष तक द्वीप पर हालैंड वालों का अधिकार रहा। १७९५ ई० में जब इंगलैंड तथा हालैंड में युद्ध छिड़ा तो लंका पर अंग्रेज़ों ने आक्रमण किया और ट्रंकोमाली पर अधिकार जमाया। १७९६ ई० में कोलम्बो पर अंग्रेज़ों ने अधिकार कर लिया, उसके पश्चात् गाले (डच अफसर) ने आत्म समर्पण कर दिया। कुँडयान प्रान्तों पर भी अंग्रेज़ों ने अधिकार प्राप्त कर लिया।

२ मार्च सन् १८१५ ई० को जार्ज तृतीय समस्त लंका द्वीप का महाराजाधिराज घोषित किया गया।

जलवायु तथा वर्षा

कोलम्बो की साल भर की जलवायु में बहुत कम अन्तर पड़ता है। औसत तापक्रम ८१° रहता है। जनवरी में रात के समय तापक्रम ७८° और अप्रैल में ८६° डिग्री रहता है। मार्च मास का सब से नीचा तापक्रम ७६ अंश और अप्रैल का ८३ अंश रहता है। छाया में कोलम्बो का तापक्रम सबसे अधिक १६५.५ (पहली अक्टूबर १८७६) अंश तक पहुंच चुका है।

कोलम्बो की औसत वर्षा ८८ इंच है। पूर्वी संसार में कोलम्बो नगर स्वास्थ के लिए उत्तम स्थान माना जाता है। विदेशी लोगों को पेचिश, और दस्त और पेट की शिकायत अधिक रहती है। मलेरिया बुखार और फोड़े, फुंसियों की भी अधिकता रहती है पर थोड़ा ध्यान देने तथा जलवायु के परिवर्तन करने से रोग से छुट्टी मिल जाती है।

देश दर्शन

धर्म

लंका का मुख्य धर्म बौद्धमत है। यहां के अधिकांश निवासी बौद्ध धर्म के मानने वाले हैं। बरमा, स्याम और चीन के निवासी लङ्का को इसी कारण बुद्ध धर्म का घर मानते हैं।

बौद्ध लोग आवा-गवन में विश्वास करते हैं उनका विश्वास है कि उनकी आत्मा निर्वाण प्राप्त करने के पूर्व अनेकानेक शरीर धारण करेगी और पवित्र होती जावेगी जब पूर्ण-रूपेण पवित्र हो जावेगी तो मोक्ष की प्राप्ति हो जावेगी। मोक्ष अथवा निर्वाण उस अवस्था का नाम है कि जब आत्मा का संसारिक वस्तुओं से किसी प्रकार का सरोकार न रहेगा और उसे पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी।

बुद्ध अनुयाइयों के पश्चात् हिन्दू धर्म के मानने वालों की गणना है। तीसरा स्थान ईसाइयों का और चौथा मुसलमानों का है।

प्राचीन निवासी राक्षसों, पिशाचों, यक्षों यक्षणियों आदि की उपासना करते हैं। बीमारी तथा मृत्यु के

समय आदि निवासियों का दोषारोपण इन्हीं प्राणियों पर होता है।

गवर्नमेंट (सरकार)

लङ्का द्वीप का शासक गवरनर द्वारा होता है जिसकी नियुक्ति अब तक ब्रिटेन के सम्राट द्वारा हुआ करती थी। वह प्रधान सेनापति तथा उप-एडमिरल का भी काम करता है। उसकी सहायतार्थ ५ सदस्यों की एक एक्जक्यूटिव सभा होती है। कानून बनाने तथा और दूसरे कार्यों के मत संग्रह के लिये एक लैजिस्लेटिव सभा होती है जिसमें ९ सरकारी पदाधिकारी तथा ८ प्रजा के प्रतिनिधि होते हैं। पर अब इसमें बहुत कुछ परिवर्तन हो गया है और अब लङ्का में भी भारतीय विधान के अनुसार दो सभाएँ हैं। एक धारा सभा होती है जो प्रजा के हितार्थ नियम आदि बनाती है और दूसरी सभा शासन भार संभालती है।

शासन के ध्यान से लंका द्वीप ९ प्रान्तों में विभाजित है। पश्चिमी, मध्य, उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी उत्तरी-पश्चिमी, उत्तरी-मध्यवर्ती, उवा के प्रांत और सबरग-

मुआ प्रान्त हैं। इन प्रान्तों का शासन पहले सम्राट के प्रतिनिधियों की देख रेख में होता था पर अब इन प्रांतों में भी धारा सभाओं का निर्माण हो गया है और सम्राट के प्रतिनिधि की सलाह से शासन होता है।

न्याय के लिये लङ्का में सुप्रीम कोर्ट (सर्व श्रेष्ठ न्यायालय है। इसके अतिरिक्त ज़िले की तथा और दूसरी छोटी अदालतें हैं इनमें अब धीरे धीरे परिवर्तन होता जा रहा है। इसके अतिरिक्त गांव की पंचायतें काम करती हैं जो आदि निवासियों के छोटे-मोटे झगड़ों का निपटारा किया करती हैं।

लङ्का में लगभग ६० सिविल सर्विस के अफसर हैं जिनका वेतन ३००० से २४ हज़ार तक है।

यहां पर भारत की भांति ही अंग्रेजों का शासन है। अंग्रेज लोगों ने अपने फायदे के कारण ही इसे भारत से अलग कर दिया है नहीं तो प्राचीन काल से ही यह भारत का एक अंग बना रहा है। इसका भारत से घनिष्ट सम्बंध है।

कोलम्बो-दर्शन

मुद्रा

लङ्का में भारत की भांति ही रुपया चलता है। भारतीय रुपया वहां भी चालू है पर अठन्नी चवन्नी, दुअन्नी, एकन्नी और पैसा के स्थान पर वहां ५०, २५ और १० सेंट के चांदी के मुद्रा चालू हैं। यह मुद्रा दशमलव अनुपात के हिसाब से चल रहे हैं इसलिये भारतीय मुद्रा के प्रतिकूल अंग्रेजों के ध्यान से यहां की मुद्रा प्रणाली भारतीय मुद्रा प्रणाली की अपेक्षा सरल है।

कोलम्बो

कोलम्बो लङ्का की राजधानी तथा सर्वोत्तम प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यह हिन्द महासागर का पूर्वी संसार का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है यहां पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व जाने वाले जहाजों को ठहर कर कोयला पानी लेना पड़ता है। भारत के दक्षिण स्थिति होने के कारण इसकी महत्ता और भी बढ़ गई है। सिंगापुर, रंगून, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैन्ड, जावा, सुमात्रा, अफ्रीका अदन आदि से यहां जहाज हर समय आते जाते रहते

हैं। यह एक प्रधान जहाजी मार्ग पर स्थित है इसलिये व्यापारिक तथा सामरिक दृष्टि से इसकी महानता बहुत कुछ बढ़ी चढ़ी है। अभी हाल ही में गत महायुद्ध में जापानी बमवर्षकों ने कोलम्बो पर इसी ध्यान से आक्रमण किया था कि यदि हम इस सामरिक स्थान पर अधिकार कर लेते हैं तो फिर समस्त लङ्का तथा दक्षिणी भारत पर बमवर्षकों द्वारा आक्रमण करना कोई कठिन कार्य न होगा। यह बात ठीक भी है। दक्षिणी भारत के प्रमुख स्थानों तथा बन्दरगाहों पर कोलम्बो से सरलता पूर्वक बम वर्षा हो सकती है और समुद्री आक्रमण भी हो सकता है। अंग्रेज़ लोग इसे पहले से ही जानते थे और सिंगापुर, हांगकांग तथा वर्मा में धोका खा चुके थे अतः उन्होंने कोलम्बो में लड़ाकू-वायुयानों का अच्छा जमघट कर रक्खा था इन्होंने जापानी बमवर्षकों की दाल गलने नहीं दी और उन्हें मार भगाया।

कुछ प्रमुख बन्दरगाहों से कोलम्बो की दूरी

जैसा की पहले वर्णन किया जा चुका है यह बन्दरगाह भारत के दक्षिण और लङ्का के पश्चिमी तट पर हिन्द महासागर में स्थित होने के कारण सामरिक तथा व्यापारिक दृष्टि से बड़ा हो उपयोगी है।

कोलम्बो नगर पोर्ट सईद से ३५१० मील, अदन से २११३ मील, बम्बई से ८३० मील, मद्रास से लगभग ५०० मील, रंगून से १२३५ मील और सिंगापुर से लगभग दो हज़ार मील की दूरी पर स्थित है।

संसार के प्रसिद्ध बन्दरगाहों से व्यापारिक तथा सवारी वाले जहाज़ जो हिन्द महासागर से होकर जाते हैं उन्हें यहां रुक कर कोयला। पानी अवश्य ही लेना पड़ता है। इसी कारण व्यापारिक सामुहिक और सामरिक दृष्टि से इसकी महत्ता और भी अधिक बढ़ गई है।

भारत से कोलम्बो का मार्ग

भारत के विभिन्न स्थानों से कोलम्बो जाने के मार्ग भी विभिन्न हैं। ब्रह्मा से रंगून बन्दरगाह द्वारा सीधा समुद्री मार्ग कोलम्बो को जाता है। आसाम पूर्वी बंगाल पश्चिमी बंगाल, बिहार और उड़ीसा प्रान्तों से कोलम्बो जाने के लिये रेल तथा जहाजी मार्ग हैं। लोग रेल मार्ग से दक्षिणी भारत के बन्दरगाहों तक जाते हैं और वहां से फिर जहाजी मार्ग से कोलम्बो पहुँचते हैं। कलकत्ता, गञ्जम विजयनगर, विज़िगापट्टम्, मछली पट्टम् नेलूर मद्रास, पांडेचेरी, तुतुकुड़ी आदि तटीय बन्दरगाहों से कोलम्बो को जहाज़ जाते हैं।

संयुक्तप्रान्त, मध्य भारत के लोग रेलमार्ग द्वारा दक्षिण भारत पहुँचते हैं और फिर वहां से जहाज़ द्वारा कोलम्बो जाते हैं। पंजाब, उत्तरी पश्चिमी प्रान्त, सिंध, राजपूताना के निवासी रेल मार्ग से कराची सूरत तथा बम्बई जाते हैं और फिर वहां से जहाज़ द्वारा कोलम्बो पहुँचते हैं। इसी प्रकार बम्बई हैदराबाद, मैसूर, बरार आदि के निवासी रेल तथा जल मार्ग से कोलम्बो पहुँचते हैं।

कोलम्बो-दर्शन

इसके अतिरिक्त कोलम्बो जाने के लिये हवाई मार्ग है। कोलम्बो एक प्रसिद्ध हवाई तथा समुद्री अड्डा है। भारत के विभिन्न प्रसिद्ध हवाई स्टेशनों से कोलम्बो को हवाई सर्विस के जहाज़ जाते हैं।

देशाटन की दृष्टि से कोलम्बो जाने के लिये उत्तरी पूर्वी तथा मध्य भारत के निवासियों के लिये रेल मार्ग की यात्रा बड़ी ही सुगम तथा मनोरञ्जक है। रेलमार्ग से लोग पूर्वी मध्यवर्ती तथा दक्षिणी भारत के प्रसिद्ध धार्मिक स्थानों का दर्शन भी कर लेते हैं और सुन्दर वनों, उपवनों, झीलों, पहाड़ों नदियों तथा सुरंगों का अवलोकन करते हुये रामेश्वरम् के प्रसिद्ध तीर्थ स्थान पर पहुंच जाते हैं। यह प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां पर मर्यादा-पुर्षोत्तम भगवान रामचन्द्र ने शिव-लिंग की स्थापना की थी। यहीं पर राम के पुल के टूटे फूटे चिन्ह देखने को मिलते हैं। साथ ही शिव-लिङ्ग के दर्शन होते हैं और फिर जहाज़ भी मिल जाता है जिसके द्वारा कोलम्बो की यात्रा समाप्त की जाती है।

रेलें

सीलोन या लङ्का की रेलवे लाइनें सरकार की है इसलिये उनसे सरकार को अच्छी आय होती है। प्रथम रेलवे लाइन कोलम्बो से नानूओया को जाती है। इस लाइन पर नुवारा एलिया सैनीटोरियम है तथा हापूराले नाम प्रसिद्ध स्टेशन है।

दूसरी लाइन पाडेनिया से माटले को जाती है। तीसरी रेलवे लाइन समुद्र तट की है जो कोलम्बो से दक्षिण की ओर बेनटोटा को जाती है। यह लाइन गाले तथा द्वीप के अन्तिम स्थान माट्रा को जाती है।

३० मील तक रेलवे लाइन की यात्रा के लिये प्रथम तथा द्वितीय श्रेणी के टिकट तीन दिन के लिये मिलते हैं। तीस मील के ऊपर के टिकट १७ दिन तक के लिये मिलते है। प्रथम श्रेणी के यात्री को ११२ पौंड तथा द्वितीय श्रेणी के यात्री को ८४ पौंड सामान साथ ले जाने की आज्ञा है। ५० प्रथम श्रेणी के टिकटों का चुकता करने पर रेलवे मैनेजर स्पेशल रेलगाड़ी का प्रबंध कर देता है।

कोलम्बो-दर्शन

यात्रियों को कोलम्बो से लङ्का का भ्रमण करने के लिये बड़ी सुविधा होती है। यदि यात्रियों की संख्या १० या इससे और अधिक होती है तो सुविधा और भी अधिक हो जाती है। ऐसे यात्रियों को एक अर्जी कोलम्बो के रेलवे मैनेजर को दे देना पड़ता है कि वे अमुक स्टेशन से अमुक स्टेशन तक अमुक ट्रेन से अमुक श्रेणी की यात्रा करना चाहते हैं। मैनेजर उस पर आज्ञा पत्र दे देता है उसे दिखाने पर उतने व्यक्तियों को १७ दिन के लिये एक ओर का किराया लेकर वापसी टिकट मिल जाता है।

कोलम्बो से चलने के पश्चात् पहाड़ी चोटी पार करने पर बड़े ही मनोहर पहाड़ी दृश्य देखने को मिलते हैं। ये रेलवे लाइनें आधुनिक संसार की विज्ञान कला की उच्चकोट की हैं।

कोलम्बो से रामबुक्काना जाने वाली रेलवे लाइन समतल मैदान होकर जाती है जहां चारों ओर धान की खेती होती है। खेतों के अतिरिक्त घास के मैदान हैं जहां घास होती है। बीच बीच में गोय्या (किसान) लोगों के घर बने होते हैं। घरों के चारों ओर केला, नारियल, सुपाड़ी, आम आदि के बगीचे लगे रहते हैं।

कोलम्बो से इधर उधर जाने वाली रेलगाड़ियों में खाने-पीने के सामान के डिब्बे जुड़े रहते हैं जिनसे यात्री लोग जल-पान की सामग्री खरीद सकते हैं।

डाक और तार

डाक सम्बन्धी मामले में सिंहलद्वीप अथवा लंका दूसरे देशों से आगे बढ़ा हुआ है यहाँ पोस्ट कार्ड का मूल्य ३ सेंट है। ५ सेंट का पोस्ट कार्ड संसार के किसी भी स्थान को भेजा जा सकता है। लिफाफे का मूल्य भी ५ सेंट है। रजिस्ट्री वाले पत्रों में १५ सेंट के टिकट लगते हैं।

द्वीप के भीतर तार देने में ४० सेंट साधारण तार के लिये और आवश्यक के लिये ८० सेंट देना पड़ता है। यह तार ८ शब्दों के होते हैं। प्रत्येक अधिक शब्द के लिये साधारण तौर में ५ सेंट और आवश्यक में १० सेंट देना पड़ता है।

लङ्का से भारत को तार देने में २० सेन्ट प्रतिशब्द खर्च देना पड़ता है। दूसरे देशों के लिये तार का व्यय समयानुसार बदलता रहता है पर साधारण रूप से ३)

प्रति शब्द पड़ता है। कोलम्बो का डाक तथा तार विभाग बड़ा ही उपयोगी है।

मनीआर्डर भेजने में लङ्का द्वीप के भीतर प्रत्येक दस रूपये पर १० सेन्ट (लगभग ६ पैसा) अदा करना पड़ता है। बाहर भेजने में १० पौंड पर एक रुपया कमीशन देना पड़ता है।

यात्रा

कोलम्बो में यात्री को देखने के लिये बहुत अधिक सामग्री है। जब कोई विदेशी सर्व प्रथम कोलम्बो के तट पर उतरता है तो वहां की धूप देख कर उसे अनुभव होता है कि शायद वहां सदैव धूप ही रहती है। वर्षा का नाम भी नहीं है पर शायद उसे कुछ ही क्षण के पश्चात् पता चलता है कि धूप वर्षा के रूप में बदल गई। कहने का तातपर्य यह है कि धूप अथवा वर्षा होते वहां देर नहीं लगती। एक क्षण धूप रहती है तो दूसरे क्षण वर्षा होने लग जाती है और वर्षा के शीघ्र ही पश्चात् पुनह कड़ी धूप हो जाती है।

देश दर्शन

यात्री कोलम्बो के तट पर जैसे ही पहुँचता है वहां के आदि निवासियों के लड़के पुष्पों की डालियां लिये सामने खड़े रहते हैं डालियों के पुष्प रंग, विरंगे बड़े ही मनोहर होते हैं।

कोलम्बो की सड़कें चौड़ी और बड़ी सुन्दर पक्की बनी हैं जिनके दोनों किनारों पर अजीब-गरीब सुन्दर वृक्ष लगे हैं इन वृक्षों की पत्तियां आश्चर्यजनक भांति भांति की होती हैं कितने ही वृक्षों की पत्तियां तो कई गज़ लम्बी होती हैं। कोलम्बो में द्वीप के दूसरे भागों की भांति ही वनस्पति की अधिकता इसका मुख्य कारण यह है कि वहां वर्षा साल भर अधिकता के साथ होती है। जब पानी बरसता है तो बड़े जोरों की वर्षा होने लगती हैं और थोड़ी देर के पश्चात् सूर्य देव अपनी पूरी शक्ति के साथ चमकने लगते हैं। शीघ्र ही बादल एकत्रित हो जाते हैं और वैसे ही शीघ्रता पूर्वक वे अलोप भी हो जाते हैं।

घोड़ा गाड़ियां कोलम्बो में चलती हैं। इन गाड़ियों के घोड़े छोटे छोटे होते हैं। बैलगाड़ी चलने का रिवाज वहां अधिक है। बैलों का अधिकांश रंग भूरा तथा श्वेत

होता है। यहां के भैंसे अजीब होते हैं उनके सींग नहीं होती है पर डील होती है ये बड़े अजीब पशु होते हैं। ये बड़े छोटे होते हैं। बैल गाड़ी दो पहियों की होती है। ये पशु तो होते बड़े छोटे हैं पर बड़े तेज चला करते हैं। बैलगाड़ियां सामान ढोने और सवारी ले जाने ले आने का काम करती हैं। बैलों के नथनों में सूराख करके डोर बाँध दी जाती है उसी डोर के सहारे कोचवान अथवा गाड़ीवान बैलों को चलाता है। एक तथा दो बैलों वाली गाड़ियां चला करती हैं। बैल गाड़ियों के गाड़ीवान निर्दयी होते हैं और भारी भारी बोझ लाद कर पीटते हुये बैलों को हांका करते हैं।

कोलम्बो में मार्ग प्रदर्शक सरलता पूर्वक मिल जाते हैं जो थोड़े से पैसों में यात्रियों को विभिन्न स्थानों का सरलतापूर्वक दर्शन करा देते हैं।

कोलम्बो की सड़कें बड़ी साफ सुथरी रहती हैं। सड़कें भूरे रङ्ग की हैं। चाहे जितना पानी बरसे और चाहे जितना धूप होवे सड़कों पर वर्षा और धूप का किञ्चित मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता है। न तो वहां कीचड़ होती है और न धूल ही उड़ती है।

लङ्का के लोग गरीब तो हैं पर वहां गन्दगी का नाम नहीं है। गरीब से गरीब किसान का झोपड़ा सुन्दर साफ-सुथरा रहता है और उसके चारों ओर सुन्दर वाटिकाएँ लगी रहती हैं। किसानों के झोपड़ों के पास जहां कहीं सरोवरों तथा तालाबों में खेती के लिये पानी एकत्रित कर लिया जाता है उनमें मेंढक ऊँचे शब्दों में अपना सुर उसी भांति अलापते रहते हैं जैसे कि हमारे देश में देहात में वर्षा ऋतु में सुनने में आता है।

लङ्का में सांपों तथा बिस्तुइयों की बड़ी अधिकता है। कोलम्बो में सांप तो कम दिखाई पड़ते हैं पर बिस्तुइयों की बड़ी अधिकता है। यहां की बिस्तुइयां बड़ी होती है। पानी के टब, तालाब, दीवार, वृक्ष, छत चारपाई, मेज, कुर्सी सभी स्थानों पर यह जानवर पहुँच जाते हैं। अनीभग्य व्यक्ति के लिये ये बड़े ही कष्ट के कारण बन जाती हैं पर सचमुच ये बड़ी शान्त प्रकृति की होती हैं और सिवा दिखलाई पड़ने और भग जाने के सिवा इनका दूसरा काम ही नहीं है। वर्षा-प्रान्त होने के कारण यहां कीड़े मकोड़ों की अधिकता है। कीड़े मकोड़े बिस्तुइयों की खुराक है शायद इसी कारण

ये वहां अधिकता से पाई भी जाती हैं।

यात्री को चाहिये कि वह अपने सुन्दर बहु-मूल्य वस्त्रों की सुरक्षा के साथ प्रयोग करे क्योंकि कोलम्बो में वस्त्रों की सफाई ठीक तौर पर नहीं हो पाती है और धोबी को धुलाई तो अधिक नहीं देनी पड़ती है पर धोबी के पास जाने से कपड़ा शीघ्रता पूर्वक फट जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि धोबी लोग सरोवर में ले जाकर कपड़ा फैलाकर डाल देते हैं और उसे बड़े मजबूत डंडे से पीटते हैं जिससे कपड़ा फट जाने की शंका रहती है।

कोलम्बो के समीपवर्ती स्थान

कोट या कोट्टे

यह एक रेलवे स्टेशन है और कोलम्बो के पूर्व नगर के ठीक बाहर स्थित है। यह ईसाई धर्म वालों के धर्म प्रचार का केन्द्र है। ईसाई धर्म प्रचारक भवनों से आध मील की दूरी पर एक बौद्ध मंदिर है। बौद्ध लोगों का ख्याल है कि यह मन्दिर बड़ा ही पवित्र तथा प्राचीन

है। केवल केलानी का मन्दिर इससे अधिक प्राचीन माना जाता है।

यहां साप्ताहिक पोया (पवित्र दिवस) के अवसर पर प्रार्थना तथा पूजन हेतु बड़ी भीड़ एकत्रित होती है। मन्दिर के मैदान में अशोक का एक सुन्दर वृक्ष है। यहां पर स्त्रियां तथा लड़कियां लैम्प, हैट तथा टोकरियां आदि बनाया करती हैं। कोलम्बो नगर में कोलम्बो जिले के भिन्न भिन्न भागों से फल आते हैं। स्त्रियां सवेरे फलों से भरी बड़ी बड़ी टोकरियां लेकर बाजार में आती हैं और फल बेच कर रात में अपने अपने स्थानों को लौट कर जाती है। कोलम्बो से कोट जाने आने में गाड़ी का किराया ५ रु० होता है।

———

कोलम्बो-दर्शन

कोराटोट चट्टानी मन्दिर

कोट से साढ़े सात मील आगे जाने पर रतनपुर जाने वाली प्रधान सड़क मिलती है। सड़क पर कोलम्बो से ११ मील की दूरी पर कडुवेला नामक बस्ती है। यहां पर मुसाफिरों के ठहरने के लिये एक धर्मशाला है। यह धर्मशाला (ठहरने का स्थान) केलानी नदी के सुन्दर रमणीक स्थान पर बना है। इसके आस पास के छोटे गांव मिट्टी के बर्तन बनाने का पेशा करते हैं। इस धर्मशाला से डेढ़ मील चलने पर कोराटोट का चट्टानी मंन्दिर मिलता है।

मन्दिर की रखवाली करने वाले लोग बड़े सभ्य तथा शिक्षित हैं और यात्री को आदर सत्कार के साथ बुलाते तथा बिठाते और बात चीत करते हैं। यह लोग अंग्रेजी भाषा भली भांति बोल लेते हैं। डाक्टर मुलर प्रसिद्ध एतिहासिक ने लिखा है कि यहां पर एक प्राचीन शिला लेख है। यहां पर मन्दिर के प्रधान पुजारी की देख रेख में एक पंसल पाठशाला है जहां पर बौद्ध धर्म की शिक्षा प्रदान की जाती है। पाठशाला को सरकार की ओर से प्रतिवर्ष सहायता प्रदान की जाती है। यहां से कोलम्बो को ग्रैंडपास होकर सड़क द्वारा आना होता है।

हेनारटगोडा वाटिका

इस वाटिका के लगाने का कार्य १८७६ ई० में आरम्भ हुआ था। भारत सरकार ने इसके लगाने में बहुत धन लगाया था। इस वाटिका में अनुभव के रूप में संसार के विभिन्न भागों से विभिन्न भांति के वृक्ष लाकर लगाए गये जिनमें रबर के वृक्ष प्रमुख हैं।

रेलवे स्टेशन से यह वाटिका लगभग पौन मील की दूरी पर स्थित है। रबर आदि के वृक्षों के मध्य छाया के लिये अमरीकन वृक्ष लगाए गये हैं।

वाटिका में सैकड़ों भांति के वृक्ष तथा पौधे लगाए गये हैं उनमें रबर, सुपारी, नारियल, लौंग तथा मसालों के वृक्ष प्रमुख हैं। दक्षिणी अमरीका के पास रबर, पनामा रबर, पश्चिमी अफ्रीकन रबर, जंजीबार के लता वाले रबर, बरमा के रबर आदि के वृक्ष हैं। वाटिका के अधिकांश भाग में ट्रिनडाड के कोको और लीबिया के कहवा के वृक्ष लगे हैं। वृक्षों के अतिरिक्त छोटे पौधे तथा झाड़ियां आदि हैं। वाटिका की रखवाली के लिये सिंहाली माली हैं जो बड़े सज्जन हैं और लोगों को वाटिका दिखाते हैं।

कलूतारा

यह नगर कोलम्बो से २८ मील दक्षिण की ओर स्थित है और यहां रेलवे लाइन जाती है। यह लंका द्वीप का एक बड़ा ही सुन्दर स्थान है। नदी के मुहाने पर मिट्टी के पट जाने के कारण एक सुन्दर झील बन गई है। झील के चारों ओर सुन्दर बनस्पति उगी हुई है। इस सुन्दर उपवन में भांति भांति के पक्षी तथा बन्दर रहते हैं। इसी नदी पर एक छोटा सा किला तथा आदम की चोटी (राम चोटी) हैं जिनका दृश्य बड़ा ही मनोहर है। यहां पर बड़ी सुन्दर टोकरियां बनती हैं। यहां मंगोस्टीन फल बहुत उत्पन्न होता है। यहीं पर जेमनौटारी नामक घर में मणि तथा हीरे जवाहिरात पर पालिश की जाती है।

नेगोम्बो

कोलम्बो से २३ मील उत्तर की ओर यह सुन्दर स्थान स्थित है। इसी नगर के आस पास दारचीनी के बन हैं। दारचीनी के लालच से ही पुर्तगालियों ने इस

स्थान पर अपनी किले बन्दी की थी। यहां पर समुद्र के तट पर झील के किनारे यात्रियों के ठहरने के हेतु एक बड़ी ही सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। यहां का प्राचीन किला अब जेल का काम देता है। यहां पर एक बड़ा ही विशाल मनोहर बरगद का वृक्ष तथा अनेक शिखा वाले नारियल के वृक्ष हैं। यहां की यात्रा बोट अथवा सवारी घोड़े गाड़ी या बैल गाड़ी से की जाती है। कोलम्बो से यहां तक आने जाने का खर्च लगभग साढ़े सात रुपया होता है।

पेराडेनिया तथा काँडी

कोलम्बो से ७० मील की दूरी पर पेराडेनिया तथा ७४ मील की दूरी पर कांडी स्थान है। कांडी द्वीप की पहाड़ी राजधानी है। यह नगर एक प्राकृतिक बेसिन पर बसा है। यहां का पहाड़ी दृष्य बड़ा मनोहर तथा आकर्षक है। यहां पर एक बनावटी झील है जिसके कारण नगर की सुन्दरता और अधिक हो जाती है।

यहां महावली गंगा के तट पर रायल बोटेनिकल गार्डन स्थित है। यह कांडी से ३ मील की दूरी पर नवीन पेराडेनिया स्टेशन के समीप स्थित है।

नुवारा एलिया

यह नगर लंका द्वीप का स्वास्थ्य वर्धक स्थान है यहां लोग हवा खाने तथा स्वास्थ सुधारने के हेतु जाते हैं। यह नगर मैदान में समुद्र तल से ६००० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। कोलम्बो से १३२ मील की दूरी पर यह नगर स्थित है। यहां रेल तथा सड़क द्वारा लोग पहुँचते हैं। यहां अधिकांश अंग्रेज तथा ऐंग्लो इंडियन लोग रहा करते हैं कोलम्बो के पश्चात् इसी नगर को विदेशी लोग अधिक पसंद करते हैं। कोलम्बो से ४० घंटे रेल की यात्रा करने के पश्चात् लोग अंतिम स्टेशन पर उतरते हैं और फिर शेष चार मील की यात्रा सड़क की सवारी द्वारा तय करते हैं।

जनवरी से मई मास के मध्य का ऋतु यहां का बड़ा ही सुहावना होता है। यहां का साधारण ताप प्रायः ५६ अंश रहता है कभी कभी तो यह ताप इतना कम हो जाता है कि जमने वाले अंश से भी नीचे गिर जाता है। रात में यहां सदैव गर्मी प्राप्त करने के लिये जलाने की लकड़ी, कम्बल तथा रजाई की आवश्यकता रहती है। यहां से बदली जाने वाली सड़क पर यहां

से सात मील की दूरी पर सरकारी बोटैनिक बाटिका है। इस बाटिका में भांति भांति के सुन्दर पुष्प तथा फलों आदि के वृक्ष हैं जो विज्ञान के दृष्टि से बड़े ही महत्वपूर्ण हैं।

पौधे लगाने वाले प्रान्त

अम्बागमुवा, टिकोया, दिम्बुला, माटले प्रान्तों में पौधे बहुत बड़ी संख्या में लगाये गये हैं। इन प्रान्तों में होकर रेलवे लाइनें जाती हैं। निचले दिम्बुला, दिकोया और मस्केलिया जिलों के लिये हाटन स्थान पर एक होटल है। हाटन में अस्त्र-शस्त्र भी तयार किये जाते है जो इसी स्थान के नाम से प्रसिद्ध हैं। माटले में एक सुन्दर धर्मशाला है।

आदम चोटी (राम चोटी)

कोलम्बो से यहां तक पहुंचने में दिन भर का समय लगता है। यह चोटी बड़ी ही पवित्र मानी जाती है। हाटन इसका रेलवे स्टेशन है। हाटन से यह पांच मील की दूरी पर स्थित है। पर्वत की गर्दन तक तो

चढ़ान सरल है। उसके पश्चात् चढ़ाई कठिन है चोटी के समीप बहुत से भवन बने हैं जहां लोगों को ठहरने के लिये कपड़ों का प्रबंध करना परम आवश्यक हो जाता है क्योंकि सरदी पड़ती है। राम चोटी पर मंदिर, तथा पादुका बनी है जिसके दर्शन के लिये लोग दूर दूर से आते हैं। कहते हैं कि इस चोटी से मैदान तथा समुद्र का दृश्य इतना मनोहर लगता है कि जिसकी तुलना संसार में अद्वितीय है।

लंका के गड़े हुये नगर

दम्बुला, अनुरुद्धपुर, मिहिंतले, मित्रेरी, पोलोनारुआ आदि लंका के प्रसिद्ध पृथ्वी में गड़े हुये नगर हैं। इन नगरों की खोदाई का कार्य लंका की सरकार ने किया है और प्राचीन काल की अद्भुत वस्तुएँ प्रकाश में आई हैं। इनकी खोज वैज्ञानिकों ने की है जिससे लंका की प्राचीन सभ्यता और इतिहास का अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है।

देश दर्शन

कोलम्बो का बड़ा बन्दरगाह

अदन, आस्ट्रेलिया या सिंगापुर से चलकर कई दिन समुद्री जहाज पर हिन्दमहासागर में चलने के पश्चात् जब लोग लंका के तट पर आते है तो उन्हें उल्फेन्डाल के चर्च के गुम्बदों को देख कर बड़ी ही अधिक प्रसन्नता प्राप्त होती है। इन गुम्बदों के पश्चात् कोलम्बो का प्रकाश भवन तथा पताका दिखलाई पड़ते है। उसके बाद शीघ्र ही नगर के दोनों ओर नारियल वृक्षों की पंतियां दिखाई पड़ती है।

दक्षिण से आने वाले लोगों को कोलम्बो से सात मील की दूरी पर माउँट लाविनिया का होटल सर्व प्रथम मिलता है। यह भवन सुन्दर स्वेत रंग का बना हुआ है। साफ-सुथरे मौसम में भीतर के पहाड़ दिखाई पड़ते हैं। राम चोटी का दर्शन तो ८० या ६० मील की दूरी से ही होने लगता है। राम की चोटी पर्वतीय-श्रेणियों के बीच ७३५२ फुट की ऊँचाई पर स्थित है। इस चोटी को बौद्ध, हिन्दू और मुसलमान सभी बड़ी पवित्र मानते हैं। मुसलमानों का मत है कि इस चोटी

पर आदम उतरे थे और उन्हीं के पांव के चिन्ह बने हैं। हिन्दुओं का विश्वास है कि शिव भगवान यहां उतरे थे जिनके पांव-चिन्ह यहां हैं। बौद्ध लोग उन पाँव-चिन्ह को बौद्ध भगवान का बतलाते हैं। ईसाई लोग इसे सेंट टामस के पाँव के चिन्ह मानते हैं। यह स्थान कोलम्बो के प्रकाश घर से दक्षिण की ओर स्थित है।

रात के समय में कोलम्बो हारबर में स्टीमर स्वतंत्रता पूर्वक प्रवेश करते रहते हैं। रात में कोलम्बो प्रकाश घर की रोशनी १७ मील की दूरी से दिखलाई पड़ने लगती है। कोलम्बो से दक्षिण ३० मील की दूरी पर बेरुवाला नामक प्रकाश घर है।

जहाज से उतरने के बाद लोगों को नावों द्वारा तटीय भवनों को जाना पड़ता है। जैसे ही लोग जहाज से उतरते हैं वैसे ही उनके सामने 'टाम्बी' लोगों की भीड़ लग जाती है। टाम्बी लोग लंका के जौहरी हैं जो हेरे, जवाहिरात मोती तथा दूसरी बहुमूल्य वस्तुएँ जो समुद्र से प्राप्त होती हैं उनका व्यापार किया करते हैं। पर यह लोग बहुधा ठग होते हैं और अच्छी वस्तु लोगों को नहीं देते मूल्य भी धोका देकर अधिक प्राप्त

कर लेते हैं इसलिये लोगों को चाहिये कि जहां तक सम्भव हो सके इन लोगों से सामान न लें।

यदि घाट पर उतरने पर किसी प्रकार का झगड़ा उत्पन्न हो जावे तो उसकी सूचना जेटी मास्टर से कर देनी चाहिये। वह शीघ्र ही फैसला कर देता है। यदि झगड़ा पेचीदा हो तो उसकी सूचना हार्बर मास्टर से करनी चाहिये। हार्बर मास्टर चुँगीघर में रहता है और उसे पुलीस मजिस्ट्रेट की शक्ति सरकार की ओर से प्राप्त है। वह चाहे तो सज़ा और जुर्माना भी कर सकता है।

हार्बर का संक्षिप्त इतिहास

कोलम्बो के वर्तमान बन्दरगाह के निर्माण का खाका सरजानफूड ने तयार किया था। इसके बनाने में साढ़े नौ वर्ष लगे थे। बन्दरगाह की नींव इंगलैंड के प्रिंस आफ वेल्स ने १८७५ ई० में डाली थी ब्रेक वाटर के बनाने का कार्य जनवरी १८७७ ई० में आरम्भ हुआ था। ब्रेक वाटर के गुम्बद के प्रकाश घर का निर्माण १८८५ ई० में हुआ था।

कोलम्बो-दर्शन

बन्दरगाह के ब्रेक वाटर घाट की दीवारें ६६५ फुट गहरे पानी तक गई हैं और साढ़े चार एकड़ भूमि घेरे हैं। ब्रेक वाटर पूर्व की ओर से उत्तर की ओर ३१५० फुट जाता है और फिर घुमाव खाकर पूर्व की ओर चला जाता है। कुल लम्बाई ४२१२ फुट है। यह पक्के कंकरीट की चट्टानों का बना है यह चट्टाने १६ से ३२ टन तक प्रत्येक वज़न में हैं। दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से बचाने के लिये ५०० एकड़ स्थान सुरक्षित रक्खा गया है जिसकी गहराई २६ से ४० फुट तक है। प्रथम श्रेणी के जहाजों के लंगर डालने के हेतु चौबीस लंगर के चिन्ह समुद्र में बनाए गये हैं। ब्रेक वाटर के बनाने में ८५ लाख रु० खर्च हुआ था और नींव के बनाने में ४,६२,००० पौंड खर्च हुआ था। ब्रेक वाटर के ऊपर सड़क मार्ग बना है।

बन्दरगाह के उत्तर की ओर वर्षा से घाट की रक्षा तथा व्यापार की सुरक्षा के लिये और जहाजों की रक्षा के लिये बहुत अधिक धन व्यय करके सुरक्षित स्थान बनाया गया है। ब्रेक वाटर पर समुद्र की लहरें जब टक्कर मारती हैं तो उसका दृश्य बड़ा ही मनोहर होता है।

देश दर्शन

तट

सवारी जहाज सवारी उतरने वाले घाटों पर आकर खड़े हो जाते हैं और तब उनकी सवारियां उतरती हैं। उतरने पर यात्रियों का प्रथम कार्य चुंगी अदा करना होता है। मुसाफिर घाट पर ही चुंगी घर है जहां चुंगी लेने वाला अफसर रहता है वह सामान को देख भाल भली-भांति करता है। यहां के चुंगी अफसर को १०० रु० के मूल्य तक के सामान पर चुंगी लेने का अधिकार है। किताबों, बिसातखाना के सामान, विज्ञान शास्त्र के औज़ार आदि पर चुंगी नहीं लगती है पर इसके अतिरिक्त अधिकांश वस्तुओं पर साढ़े छः प्रतिशत चुंगी लगती है। अग्नि अस्त्रों पर ५ रु० से १० रु० तक चुङ्गी लगती है।

चुंगी अदा करने के पश्चात् कुलियों के साथ मुसाफिर बाहर होते हैं और अपने अपने स्थानों को या समीपवर्ती होटलों को लोग चले जाते हैं। यहां पर ग्रैंड ओरियंटल होटल है जहां बाहरी मुसाफिर ठहरते हैं। होटल में ठहरे लोग बैलगाड़ियों या रिक्शों पर चढ़ कर समुद्र तट की हवा खाते हैं।

कोलम्बो-दर्शन

कोलम्बो में किराया घंटे के हिसाब से देना पड़ता है। साधारण रूप से १ घंटे का किराया १ रु० देना पड़ता है। अधिक समय तक सवारी रखने में किराया भी कम हो जाता है। नगर के बाहर जाने में भी अधिक किराया चुकता करना पड़ता है। यूँ तो किराया निर्धारित है पर नगर के बाहर जाने वालों को किराया तै कर लेना चाहिये जिससे किसी प्रकार का झगड़ा न पड़े। घाट से सवारी तक ले जाने के लिये कुली को दो पैसे से ६ पैसे तक देना पड़ता है। अधिक दूर ले जाने में अधिक देना पड़ता है।

घाट से बाहर आने पर मार्ग प्रदर्शक की आवश्यकता होती है। मार्ग प्रदर्शक लोग खड़े मिलते हैं उनकी पहचान उनका पहनावा है। वे गहरा-नीला कोट पहिनते हैं।

घाट के समीप टी सीलोन हो कम्पनी लिमिटेड है। यह भवन एक सुन्दर भव्य स्थान है। यहां लोगों के चाय-पानी का प्रबन्ध समुचित रूप से रहता है। इस कम्पनी का मुख्य कार्य लंका की चाय का संसार के दूसरे भागों में प्रचार करना है। पास ही ओरियंटल होटल का भव्य भवन स्थित है।

पास ही कोलम्बो का टूटा-फूटा किला बना है। इसे सर्व प्रथम पुर्तगालियों ने बनवाया था।

यार्क स्ट्रीट (सड़क)

बन्दरगाह के समीप ही यार्क सड़क है। इस सड़क पर पेनिनसुलर ऐन्ड ओरियंटल स्ट्रीम नैवीगेशन कम्पनी स्थित है। यह कम्पनी लन्दन, बम्बई, कलकत्ता, चीन, आस्ट्रेलिया, जापान और अमरीका आदि संसार के विभिन्न देशों से डाक तथा पारसल ले आने ले जाने का कार्य करती है। यहां प्रत्येक १५ दिन में विभिन्न स्थानों से आने जाने वाली डाक, सामान तथा मुसाफिरों का परिवर्तन कार्य होता है।

समीप ही जहाज से सामान उतारने वाले घाट तथा सामान रखने वाले भवन बने हैं। कम्पनी के बराम्दे के दाहिनी ओर लंका के उन व्यापारियों की दूकाने हैं जो हीरे, जवाहिरात, मणि, मोती, सीप आदि आदि वस्तुओं का व्यापार किया करते हैं।

कोलम्बो-दर्शन

सरकारी भवन

प्रिंस सड़क के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग में सरकारी भवन स्थित हैं। सरकारी भवनों का प्रधान भाग लंका के प्राचीन गवरनर सर एच० जी० वार्ड के समय में बनाया गया था। यह भवन अपनी कला का एक अद्भुत भवन है।

बाग के दूसरी ओर चुंगीघर है जो १८७६ ई० में बना था। चुंगीघर के बाईं ओर फौज को रसद इकट्ठा करने वाला कालोनियल स्टोर है। यहां पर सेंडीकैट तथा दूसरे नाविक कम्पनियों के दफ्तर हैं।

प्रधान भवन के ऊपरी भाग में मध्यवर्ती स्थान में कोलम्बो का लैजिस्लेटिव भवन है। उसके आगे सेक्रेटैरियट भवन है। यहां पर कालोनियल मंत्री तथा सरकार के चीफ एक्जीक्यूटिव अफसर का दफ्तर है। गवरनर की अनुपस्थिति में यही अफसर सीलोन के शासन का कार्यभार संभालता है। नीचे आडित का दफ्तर है यह दफ्तर पहले सरकारी आय, लगान, मालगुजारी और सरकारी व्यय का भी हिसाब किताब रखता था।

इसी सरकारी भवन में सीलोन सेविंग बैंक आफिस आफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन, सरकारी छापाखाना के दफ्तर हैं। इस छापाखाना में समस्त सरकारी कागज़ात छापे जाते हैं।

सामने महारानी भवन है। इस भवन में सीलोन कालोनी का ब्रिटिश गवरनर जब राजधानी में रहता है तो वह यहीं निवास करता है। यहीं पर सरकार के प्रबंध-कारिणी समिति की बैठक होती थी।

बैली सड़क

इस सड़क पर कोलम्बो का ओरियंटल बैंक कारपोरेशन लिमिटेड, दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों के कारखाने हैं।

सड़क के बाईं ओर ली, हेजेज़ ऐन्ड कम्पनी, नेशनल बैंक आफ इंडिया, मद्रास बैंक, आगा बैंक आदि स्थित हैं। नीचे आगे चलकर सीलोन प्लांटर्स स्टोर्स एंड एजेन्सी तथा सीलोन चैम्बर्स आफ कामर्स आदि हैं। क्वींस सड़क पर महारानी भवन से मिला हुआ मर्कनटाइल बैंक आफ इंडिया, लंदन तथा चीन

आदि हैं। यहीं पर ह्विट हाल एण्ड को० (कम्पिनी) है। यहीं आस्ट्रेलिया, चीन, लन्दन, न्यूजीलैंड तथा और दूसरे देशों के दूतावास हैं।

क्वींस रोड पर ओरियंटल बैंक स्टेटस के बाईं ओर सीलोन का स्वतंत्र छापा खाना है। 'इंडिपेंडेंट' ८ पन्नों का दैनिक पत्र यहां से प्रकाशित होता है। यह लंका का प्रधान पत्र है जिसने १८८८ ई० में प्रकाशित होना आरम्भ किया है। यह लंका द्वीप का सबसे बड़ा दैनिक पत्र है। विदेशों के लिये यहां से 'सीलोन मेल' नामक पत्र प्रकाशित होता है।

इसी सड़क पर घंटाघर है जो प्रकाशघर का भी काम देता है। यह घंटाघर १८५७ ई० में बना था। इस घर के प्रकाश की गणना संसार के सर्वोत्तम प्रकाशों में होती है। प्रकाश की ऊँचाई समुद्र-तल से १३२ फुट ऊँची है। साफ मौसम में यह प्रकाश सत्रह मील की दूरी तक दिखाई पड़ता है। यह रोशनी ३० सेकेंड के अंतर से तीन बार चमक पैदा करती है। प्रत्येक बार रोशनी सवाचार से सवा अठारह सेकेंड तक रहती है।

चैथम सड़क

क्वीन्स सड़क को पार करती हुई जाती है। यहां पर ए० डबलू केव ऐन्ड कम्पनी है। यहां पर यात्रियों को प्रत्येक भांति के पत्र, पत्रिकाएँ, उपन्यास आदि की नवीन पुस्तकें प्राप्त हो सकती हैं। इसी सड़क पर इटली का दूतावास है।

यहीं पर "टाइम्स आफ सीलोन" नामक साप्ताहिक पत्र का कार्यालय है। यह कार्यालय १८८३ ई० में आरम्भ हुआ। 'आबज़रवर' नामक पत्र भी इसी कार्यालय से प्रकाशित होता है। 'स्टीम' नामक नाविक पत्र भी यहीं से निकलता है। इसी कार्यालय के सामने रायल आर्टिलरी तथा एशियाई आर्टिलरी है।

चैथम सड़क के अंत पर ब्रिटिश इंडिया होटल है। जहां पर प्रत्येक भांति का भोजन किसी समय भी यात्रियों को प्राप्त हो सकता है।

चैथम सड़क पर ही बोसक्वेट ऐन्ड कम्पनी है जिसके सामने ग्लोब रेसरोरेंट है। इनके अतिरिक्त फ्रेडेन वर्ग ऐन्ड कम्पनी, जर्मन दूतावास, गैन ऐन्ड

को, मैक मिलन ऐन्ड को, सी० एम० क्रैमर ऐन्ड सन्स, अमरीकन दूतावास, मिलिट्री कैन्टीन, डब्लू० एल०एम० स्कीन्स ऐन्ड को, डा० एफ० डे सिलवा ऐन्ड को, फरडीनैन्डो की जहाजी कम्पनी तथा मार्को पोलो की प्रसिद्ध तम्बाकू की कम्पनी आदि हैं।

चैथम सड़क पर टरकिश स्नानागार स्थित हैं। यह स्नानागार समुद्री यात्रियों के लिये लम्बी यात्रा के पश्चात् बड़ा उपयोगी है। यह स्नानागार नहरों की एक पंक्ति में स्थित हैं। यहां योरुपीय लोगों की देख रेख में आधुनिक ढंग पर उष्ण, शीतल, गंधक, बिजली भाप फव्वारा और गोता लगाकर स्नान करने का प्रबंध है।

पार्क सड़क

इस सड़क पर बेन्स कम्पनी, मिलर ऐन्ड को, कमीसैरियट स्टोर, ब्रिटैनिया होटल· रजिस्ट्रार्स जनरल्स विभाग पब्लिक वर्क्स विभाग, लन्दन तथा कोलम्बो फार्वर्डिंग एजेन्सी, कोलम्बो आइरन वर्क्स, कोलम्बो पुस्तकालय सीलोन स्टीम शिप कम्पनी, फोर्ट पुलिस

स्टेशन, सेंट पिटर्स का गिरजाघर, लोन बोर्ड ट्रेजरी, रेकार्ड ऐन्ड पेटेंट दफ्तर आदि के भवन बने हैं।

कोलम्बो आइस वर्क्स

कोलम्बो का लोहे का कारखाना चैथम सड़क पर स्थित है यह कारखाना मेसर्स वाकर ऐन्ड सन्स कम्पनी का है। यहां पर चाय सम्बंधी कल पुर्जे बनाए जाते हैं। यहां उष्ण देशी उपज से सम्बंध रखने वाले कल पुर्जों के अतिरिक्त समुद्री घाट, जहाज और दूसरे कामों में प्रयोग किये जाने वाली मशीने तथा कल-पुर्जे तयार किये जाते हैं। समुद्री घाटों की मरम्मत का काम भी यही कारखाना करता है।

कोलम्बो के प्रसिद्ध लोहे के कारखाना विभिन्न भागों में बँटा है। प्रत्येक विभाग की देख रेख योरुपीय प्रसिद्ध वैज्ञानिक करते हैं।

(१) इंजीनियरिंग विभाग में जहाजी कामों के लिये प्रत्येक भांति की मशीने तथा कल-पुर्जे हैं।

(२) लोहार की दूकान···इसमें १६ बड़ी भट्टियां तथा दो मशीन वाले हथोड़े हैं ।

(३) कारपेंटर (बढ़ई) की दूकान और आरी मिल—इसमें अनेक भांति के आधुनिक लकड़ी काटने, बनाने के कल-पुर्जे हैं । इनके अतिरिक्त बन्दरगाह के समीप कम्पनी का एक और कारखाना है जहां थोड़े समय में हो १० टन लोहे का सामान तयार किया जा सकता है ।

कारखाने के पास एक लकड़ी का बड़ा स्टाक रखने का स्थान है जहां मोलमीन की आबनूस, साखू लकड़ी तथा लंका में पाई जाने वाली लकड़ी का ढेर रहता है । बिक्री के सामान का स्टाक कारखाना के सामने रहता है जो नगर की आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहता है ।

इस कम्पनी के मालिक सोलोन स्टीमशिप कम्पनी के एजेन्ट हैं जिनके पास बड़े बड़े जहाज हैं । यह जहाज़ यात्रियों को द्वीप के भिन्न भागों में ले जाने ले आने के कार्यों में व्यस्त रहते हैं । द्वीप का भ्रमण जहाजों द्वारा करने में दक्षिण की ओर गाल, हाम्बैनटोटा बैट्टीकोला

और ट्रिन्कोमाली पूर्व की ओर, प्वाइंट पेड्रो। जाफिना और पौम्बेन भारतीय तट पर उत्तर की ओर हैं। द्वीप का समुद्री भ्रमण करने में आठ या दस दिन लगते हैं।

कोलम्बो पुस्तकालय

यह पुस्तकालय जनरल पोस्ट तथा टेलीग्राफ आफिस के समीप स्थित है। पुस्तकालय की स्थापना १८७४ ई० में हुई थी। रविवार के अतिरिक्त पुस्तकालय ६ बजे सवेरे से ६ बजे संध्या तक खुला रहता है। रविवार को पुस्तकालय एक बजे बन्द हो जाता है।

पुस्तकालय की प्रवेश फीस १०) और मासिक चन्दा २) है। नगर के लगभग बड़े बड़े लोग इसके सदस्य हैं। सदस्यों को अधिकार है कि वह विदेशी यात्रियों को पुस्तकालय का निरीक्षण करा सकते हैं और यात्री उस अवस्था में २४ दिन तक पुस्तकालय से लाभ उठा सकते हैं।

यात्री लोग बिना किसी सदस्य की सहायता के १) फीस देकर दो दिन तक और २) फीस देकर एक

सप्ताह तक रीडिंग रूम से लाभ उठा सकते हैं। वे लाइबेरियन के पास रुपया जमा करके पुस्तकें भी ले जा सकते हैं।

पुस्तकालय में चालीस हजार पुस्तकें हैं। यहां प्रतिदिन इंगलिश, आस्ट्रेलियन, भारतीय तथा फ्रांसीसी पत्र, पत्रिकाएँ आती हैं।

गोलफेस

यह स्थान कोलम्बो के दक्षिण में बड़े ही सुन्दर स्थान पर है। यह स्थान सेना के लिये सुरक्षित है। यहां का जलवायु स्वास्थ के लिये बहुत अच्छा है। यहां गोर्डन बाग में सप्ताह में एक बार फौजी बाजा बजाया जाता है। सिनामन गार्डन में दौड़ होती है। यहीं पास ही फौजी बैरियल भूमि हैं। जहां फौजी लोगों की कब्रें हैं। इसी सड़क पर कोलम्बो का क्रीकेट का क्लब है।

गोलफेस होटल एक खुले मैदान में समुद्र तट पर स्थित हैं। यहां श्रमजीवी लोग हवा खाने के लिये बहुत आते हैं। होटल के दाहिनी ओर घूमने पर दो मील

लम्बा स्थान है जो कोल्लूपिटि या कोल्पेट्टी के नाम से प्रसिद्ध है। पहले यहां कोलम्बो के प्रसिद्ध व्यक्तियों के निवास स्थान बने थे। यहीं पर एक हिन्दू मन्दिर है। मन्दिर के समीप ही सीलोन जनरल आइस कम्पनी है। कोल्पेट्टी में कोलम्बो के प्रधान निवासियों के बंगले बने हैं तथा सड़क के दोनों ओर लंका के नारियल के वृक्षों की पक्तियां हैं। वाटिकाओं तथा बंगलों के भीतर दूसरे भांति-भांति के पौधे वृक्ष तथा पुष्प लगे हुये हैं।

काटेन स्पिनिंग तथा वीविंग कम्पनी मिल्स

कोलम्बो म्यूनिस्पैलिटी के बाहरी सिरे पर दक्षिण की ओर क्लिपाना नहर के तट पर कपड़े का यह कारखाना स्थित है।

यह कम्पनी १८८८ ई० में स्थापित हुई थी। यहां प्रत्येक भांति के उपयोगी कपड़े तयार किये जाते हैं। भारतवर्ष की रुई का प्रयोग कारखाने में होता है। कारखाने से कुछ दूरी पर एक पागलों का अस्पताल हैं।

प्रिंस सड़क

इस सड़क पर कोलम्बो की प्रसिद्ध कोलम्बो अपाथोकरीज कम्पनी लिमिटेड है। यहां भूगर्भ विद्या, केमिस्ट, रसाइन, दांत के डाक्टर, औषधि बेचने वाले वैद्यों, डाक्टरों, चश्मा बेचने वालों, फोटोग्राफरों और दूसरे विभिन्न व्यापारियों की दूकानें हैं।

इस कम्पनी के सामने कागिल ऐन्ड कम्पनी है। यह कोलम्बो की थोक का सामान बेचने वाली दूकान है। यहां प्रत्येक भांति का काम होता है। सिलाई, धुलाई, हैट, टोपी, सूट, तेल, इत्र, चाय, सिगरेट, सिगार तम्बाकू, मदिरा, स्पिरिट आदि का दूकाने हैं।

इसके सामने सड़क पर दूसरी ओर कुछ सैनिक बैरिक बने हैं जिनमें ब्रिस्टल होटल बहुत प्रसिद्ध है। यह प्रथम श्रेणी का होटल है। और यहां बड़े तथा धनी यात्रियों के लिये प्रत्येक भांति के सामान वर्तमान हैं उसे किसी वस्तु की प्राप्ति के हेतु अन्य स्थान पर जाने की आवश्यकता नहीं होती है। होटल में विभिन्न कम्पनियों की दूकाने हैं जो प्रत्येक सामान का प्रबंध करती हैं।

———

जनरल पोस्ट आफिस

ब्रिस्टल होटल के बगल में ही कोलम्बो का बड़ा डाकखाना है। इस बड़े डाकखाना से संसार के विभिन्न स्थानों को डाक, तार पारसल तथा मनीआर्डर आदि भेजे जाते हैं। यहां सेविंग बैंक है जहां लोग अपना रुपया जमा किया करते हैं।

यहां पोस्ट आफिस प्रजा को बड़ा सहायक है और प्रत्येक भांति की सहूलियत प्रदान करता है। इसका निर्माण कार्य सन् १८६२ ई० में आरम्भ हुआ था। डाकखाना के दाहिनी ओर गार्डन वाटिका है। पहले इसी स्थान पर पुर्तगाली तथा डच चर्च थे और उनके गवरनर रहा करते थे।

कोलम्बो म्यूज़ियम

बाहरी सरकुलर सड़क से आगे चलने पर एक विशाल भवन दिखलाई पड़ता है यही कोलम्बो का अजायबघर है। अजायबघर में प्रवेश फीस नहीं लगती है। विशाल भवन के सामने राइट आनरेबुल सर०

कोलम्बो-दर्शन

डब्लू० एच० ग्रेगोरी, के० सी० एम० जी० सीलोन के गवरनर की मूर्ति है। यह गर्वनर १८७२ से १८७७ ई० तक लंका में रहा।

हाल में प्रवेश करने पर चाय, कहवा आदि के नमूना देखने को मिलते हैं। यहाँ दाहिनी ओर एक सरकारी पुस्तकालय है जहां भांति-भांति की पुस्तकें हैं। दाहिनी ओर पुस्तकालय के अध्ययन का कमरा है। पुस्तकालय के अधिकारियों से आज्ञा प्राप्त करने पर पुस्तकालोकन किया जाता है। कमरे के बाईं ओर सीलोन की वस्तुओं, हीरे, जवाहिरात, मणि, मोती, सिक्के तथा सिंहाली लोगों के सामान आदि का भंडार है। डेविल डान्सर्स के वस्त्रों का भी यहां पर भंडार है। प्राचीन वस्त्र आभूषण आदि सामान सभी रक्खे गये हैं।

ऊपरी भाग में लंका के प्रकृतिक वस्तुओं का भंडार है जिसमें एक शार्क मछली भी है। यह मछली जनवरी सन् १८८३ ई० में मोरातुआ गांव में १२ मील कोलम्बो से पश्चिम पकड़ी गई थी। यह मछली २३ फुट लम्बी और १२ फुट मोटी है।

मध्यवर्ती गैलरी में चिड़िया, कीड़े मकोड़े आदि तथा पूर्वी भाग में मछलियों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त तितिलियों, भूमि से उत्पन्न वस्तुओं, खनिज सम्बन्धी पदार्थों, सिक्कों सांप, बिस्तुइया, शेर, चीता बन्दर आदि दूसरे पशुओं का संग्रह है।

म्युज़ियम के प्रबंध कर्ताओं के पास अजायबघर सम्बंधी प्रत्येक वस्तुओं के बारे में जानने के लिये पुस्तक मिलती हैं।

खेतिहर पाठशाला, कोलम्बो गार्डन क्लब हुनू-पीटिया प्रिन्स, विक्टोरिया पार्क, पब्लिक हाल, जनरल्स निवास भवन, वेकांडा मिल्स, यूनियन मिल्स, यूनियन प्लेस, ए० पेट ऐन्ड सन्स रेनबेनेट कम्पनी, रैटन कारखाना, बरफ का कारखाना, फौजी स्पताल आदि स्थान हैं जो इसी दक्षिणी मार्ग में देखने योग्य हैं।

कोलोन का मध्यवर्ती भाग

ग्रैंड होटल से ठीक दक्षिण चलकर यार्क सड़क होते हुए आगे बढ़ने पर सैनिक स्थान मिलता है। यहीं

पर कोलम्बो स्थित सेना परेड करती है। यहीं पर स्लेव आइलैंड पीजिन है। इसमें २४८ कोठरियां हैं।

जेलघर के सामने ही सैनिक दफ्तर भवन है। पास ही फाएर उह डिपो तथा बोथघर है। बोथ घर के आगे गुलाम द्वीप नामक स्टेशन है। यहीं पर फेरी झील है जहां प्रत्येक समय दो तीन स्टीमर चलते हुये दिखाई पड़ते रहते हैं।

कालोनियल स्टोर के आगे पुलीस के रहने का स्थान था पहले इसी स्थान पर विवाहित सैनिक रहा करते थे। यहां वृक्षों की सुन्दर पंक्तियां लगी हैं जिनमें अमरीका का रेन ट्री (वर्षा वृत्त) तथा मेडागास्कर द्वीप के वृक्ष हैं। मेडागास्कर द्वीप के वृत्तों में अप्रैल से जून तक पुष्प रहते हैं जो देखने में बड़े सुन्दर तथा मनोहर लगते हैं।

डार्ले और सूथरलैंड सड़क के चौरास्ते पर सेंट मैरी घर है जहां पर वृद्ध गरीब स्त्री-पुरुषों के लिये स्थान है। इनको खाना-कपड़ा मुफ्त दिया जाता है। यह कैथलिक मत के अनुयायी स्त्रियों द्वारा चलाया जा रहा है।

इसके आगे यूनियन स्थान, फेयर फील्ड लोहे का कारखाना, मडेपा मिल्स, तथा बैप्टिस्ट चर्च है। इस गिरजा घर के सामने एक तिकोनी भूमि में पवित्र बो वृक्ष है। यह वृक्ष बौद्ध मत वालों के ध्यान से बहुत पवित्र माना जाता है। इसी के समीप फलों वाले वृक्षों की वाटिकाएँ हैं जिनमें आम, अंजीर मुख्य हैं।

चर्च के पीछे एक मस्जिद है। पास ही नारियल के जटे से रस्सी, चटाई आदि तयार करने का कारखाना है।

रीजंट सड़क पर दूसरे घुमाव के समीप सार्वजनिक अस्पताल है जो १८६३ ई० में बनाया गया था। अस्पताल ११ एकड़ भूमि में स्थित है। लंका द्वीप में यह सब से बड़ा अस्पताल है। यह प्रतिवर्ष लगभग ११ एकड़ भूमि में स्थित है। लंका द्वीप में यह सबसे बड़ा अस्पताल है। यहां प्रतिवर्ष लगभग १० हजार व्यक्तियों का इलाज होता है।

जनरल अस्पताल के सामने सीलोन मेडीकल कालेज है। इसकी स्थापना १८७० ई० में सर एच० राबिन्सन ने की थी। यहां आधुनिक ढंग से आधुनिक शिक्षा

प्रदान की जाती है। यहीं पर सिविल मेडीकल स्टोर आउट डोर डिस्पेंसरी, डे सोया लेइंग-इन अस्पताल, आउट डोर डिस्पेंसरी स्त्रियों तथा बच्चों के लिये, डे सोया अजायब घर, मेडीकल पुस्तकालय, कोच मेमोरियल टावर पोलूज मेमोरियल हाल, सिविल मेडीकल दफतर आदि हैं।

इनके आगे कनाडा की जनरल सेमेटरी है इसी के समीप छुई-मुई का अद्भुत पौधा है। यहां ये पौधे बहुत अधिक हैं। यह बनस्पति संसार का एक अनोखा पौधा है। इसकी खूबी यह है कि यदि इसे कोई जरा भी छू लेता है तो इसकी समस्त पत्तियां मुरझाकर नीचे की ओर उसी प्रकार झुक जाती हैं जैसे कि लज्जा के कारण किसी स्त्री का सिर नीचे झुक जाता है।

कोट चर्च मिशन स्टेशन

यह कोट झील पर स्थित है। यह प्राचीन काल में सिंहाली राजों के काल में जयवरधनपुर के नाम से प्रसिद्ध था। यह स्थान दो बड़ी नदियों के मध्य स्थित है। पश्चिमी प्रान्त में कोलानी तथा कालू नदियों के

मध्य यह स्थान स्थित है। यह चर्च मिशनरियों के विद्या का केन्द्र है यहां की आबादी मुख्यतः सिंहाली हैं जो बौद्ध धर्म के मानने वाले हैं। यह स्थान शिक्षा का केन्द्र है। यहां पर लड़कों, लड़कियों तथा मास्टरों की ट्रेनिंग आदि की शिक्षा प्रदान की जाती है। यहां से लौटने पर वेके वाटा वाली सड़क पर असाध्य रोगियों के लिये विक्टोरिया होम नामक संस्था है। यहां पर चोट खाए हुये तथा ऐसे बीमार व्यक्तियों के रहने का प्रबंध है जिनका स्वस्थ होना असम्भव समझ लिया जाता है।

बलोकद का जेलखाना

सेंट लूक चर्च के पास ही लंका का सर्वप्रसिद्ध जेलखाना बलीकद है। यहां पर हजारों स्त्री-पुरुष कैदियों के रहने का स्थान है। यहां कैदियों को दरी, चटाई, कपड़ा, रस्सी आदि आदि बनाने का कार्य सिखाया जाता है। मालिगकंद वाली सड़क पर कोलम्बो का पानी का कारखाना है। मर्दन घर के पास बौद्धों

का संघमित्र लड़कियों की पाठशाला है यहीं पर लंका के प्रसिद्ध नारियल के वृक्ष हैं यह वृक्ष ताली पोट के हैं। इनकी पत्तियां बहुत बड़ी बड़ी होती है। इनकी पत्तियों के डंठल प्रायः ८ फुट लम्बे तथा गोली पत्तियों का वृत्त १३ फुट होता है जिनसे बड़े बड़े पंखे बनते हैं। कोलम्बो वाटरवर्क्स के समीप है वाजिगकंद के बौद्ध मन्दिर हैं। इन्हीं से मिला हुआ विद्योदय कालेज हैं। यह लंका द्वीप के प्राचीन शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं में से एक प्रसिद्ध संस्था है। इस कालेज का सभा पति चोटी के मन्दिर का पोहित है जो प्रथम श्रेणी का विद्वान है। इसी से थोड़ी दूरी पर पुलीस हेड क्वाटर्स है।

राएल कालेज

पहले यह कोलम्बो एकेडमी के नाम से प्रसिद्ध था। यहां पर विद्यार्थियों को यूनिवर्सिटी तक की शिक्षा प्रदान की जाती है। कोलम्बो विश्वविद्यालय से अब बड़े बड़े विद्वान निकलते हैं। इसी के समीप पवित्र ट्रिनिटी चर्च है। यहीं समीप ही एक झील है जिसके

मध्य में एक हिन्दू मन्दिर है। द्वीप का नाम धोबी द्वीप है यहीं कोलम्बो के अधिकांश धोबो कपड़ा साफ करने आया करते हैं। समीप ही एक सरकारी कारखाना है जो पब्लिक वर्क्स विभाग का कार्य करता है साथ ही सिंहाली लोगों को विभिन्न भांति की ट्रेनिंग प्रदान करता है।

उत्तरी भाग की यात्रा

यार्क सड़क पर चलने पर बाईं ओर कोलम्बो का लोहे का कारखाना है जिसके समीप ही कोयले के शेढ बने हैं इन स्थानों पर विदेश जाने के हेतु कोयले का भंडार एकत्रित किया जाता है पास ही कमल-सरोवर है जहां कमल बहुत होता है।

पेट्टाह की प्रधान सड़क

इस सड़क पर नाज, स्टेशनरी, कपड़ा लोहा तथा और दूसरे विभिन्न प्रकार के सामानों का बड़ा बाजार है।

कोलम्बो-दर्शन

म्युनिसिपल दफ़्तर तथा बाजार—यह टाऊन हाल का बड़ा भवन है। यह तीन ओर से लोहे के एक सुन्दर दीवार से घिरा है। पहले इसे एडेनबरा मार्केट कहा करते थे क्योंकि इसकी नीव ड्यूक आफ ऐडनबरा के काल में सन् १८७० ई० में पड़ी थी।

गैस वर्क्स सड़क पर कोलम्बो की गैस तथा पानी की कम्पनी है। कोलम्बो किले की पहाड़ी के सामने कोलम्बो की कचेहरियां हैं यह कचेहरियां सर्व प्रथम १८५७ ई० में बनी थीं।

यहां कानूनी कचेहरियां, सुप्रीम कोर्ट (सबसे बड़ी कचेहरी) जिला की कचेहरियां, प्रार्थना की कचेहरी तथा पुलीस कचेहरी आदि हैं। कचेहरियों के भवन बड़े सुन्दर बने हैं।

केलानी का बौद्ध मन्दिर

नदी के दूसरे तट पर बौद्ध मत का प्रसिद्ध मन्दिर है। इसको बौद्ध लोग बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं कहते हैं कि बुद्ध जी स्वयं इस स्थान पर पधारे थे। यहां पर बैसाखी पूर्णिमा का मेला लगता है।

यह मेला बड़ा प्रसिद्ध है और चार सप्ताह तक चलता है। मेले के समय मन्दिर की छटा देखने योग्य होती है जब कि समस्त मन्दिर में रोशनी की चमक-दमक रहती है और चारों ओर से लाखों मनुष्य दर्शन के लिये आते हैं जो फल फूल तथा मालाएं चढ़ाते हैं।

मन्दिर में बुद्ध भगवान की एक मूर्ति है जिसकी प्रतिमा नदी के जल में दिखलाई पड़ती है। बुद्ध भगवान की मूर्ति ३६ फुट लम्बी है जो दाहिनी करवट लेटी है। बुद्ध भगवान के निर्माण काल की यह प्रतिमा है। मूर्ति के दोनों ओर मन्दिर के रक्षकों की दो बड़ी मूर्तियां है। मन्दिर के ऊपर भी बुद्ध जी के जीवन के चित्र हैं। मन्दिर में विष्णु, शिव और गणेश देवताओं की मूर्तियां हैं।

नदी की तटीय यात्रा

फरगूसन सड़क पर ताड़, नारियल तथा सुपाड़ी आदि के वृक्ष दोनों ओर लगे हैं। नदी के किनारे किनारे नारियल के वृक्ष हैं जो देखने में बहुत भले

लगते हैं। बाईं ओर घास के बड़े बड़े खेत या मैदान हैं। सीली भूमि के कारण मनार घास भी उगती है। कहीं कहीं सिंहाली लोगों के घर हैं। सिंहाली लोग अधिकांश संख्या में धान की खेती करते हैं। इनकी स्त्रियां अपने बच्चों को साथ में लिये हुये धान के पुआल को गाड़ियों पर लाद कर चलती है। उनके साथ में कुत्ता भी रहता है। अधिकतर सिंहाली देहाती लोग नंगे बदन रहते हैं। इसका मुख्य कारण लंका की उष्ण जलवायु है। सिंहाली लोग अधिकतर प्राचीन ढंग के बने हुये झोपड़ों में रहते हैं। यह लोग नारियल के पत्तों की बनी टोपियां तथा टोप कोलम्बो के लोग भी लगाते हैं क्योंकि यह उन्हें वर्षा और धूप से सुरक्षित रखते हैं।

केलनी नदी के तट पर मक्का कूलिया, किलनी आदि तेल के कारखाने हैं। इन्हीं मिलों के सामने कव्वों का द्वीप है। रात्रि के समय कोलम्बो तथा समीपवर्ती स्थानों के कौवे इसी द्वीप पर आकर रहते है। इसी कारण इसे कौओं का द्वीप कहते हैं।

कोटाहेना का बौद्ध मन्दिर

सेंट टामस कालेज के पीछे वाली सड़क पर चलने से आगे चलकर यह बौद्ध मन्दिर मिलता है। इस मन्दिर की दीवारें कोलम्बो की प्रसिद्ध तथा प्राचीन दीवारों में मानी जाती है। इसकी दीवारों पर बुद्ध भगवान के काल के दृश्य अंकित किये गये हैं। दीवार पर बुद्ध भगवान की १८ हाथ लम्बी एक मूर्ति बनी हैं इसके अतिरिक्त इससे छोटी २४ और दूसरी मूर्तियां हैं जो बुद्ध भगवान और उनके विभिन्न जीवन काल का दर्शन कराती हैं कि किस प्रकार उन्होंने तपस्या की और अपने जीवन काल में उन्हें बुद्ध निर्वाण की प्राप्ति हुई। इन मूर्तियों में बुद्ध भगवान की भूत-पिशाचों पर विजय प्राप्ति करने वाली मूर्ति अनोखी है।

इस पवित्र मन्दिर में मुख्य भाग वह है जो 'वसन्त्र जातक' के एक भाग का वर्णन करता है। इस भाग की मूर्तियां बौद्ध भगवान के जीवन काल के वह चित्र दिखलाते हैं जैसा कि उसका जी वसन्त्र राजा के रूप में बाल-काल में था। यह स्थान भूल-भुलैया के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर से मिली हुई एक हिन्दू देवता की

समाधि है। लंका के बौद्ध मन्दिरों की एक प्रधानता यह है कि प्रत्येक बौद्ध मन्दिर के साथ साथ हिंदू मन्दिर भी बने रहते हैं जहां पर हिन्दू देवों की मूर्तियां रहती हैं। इस मन्दिर का अंतिम प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षु गुनान्द उन्नासी थे जिनकी मृत्यु १८६१ ई० में हुई ये ईसाई धर्म के कट्टर विरोधी थे। उनके विरोध के कारण यहां समीपवर्ती स्थानों में १८८३ ई० में बौद्धों और रोमन कैथलिक लोगों में ईस्टर काल में कई एक भीषण धर्म सम्बंधी संहर्ष हुये थे।

हमें ध्यान रखना चाहिये कि महाराजाधिराज अशोक के समय में भारतवर्ष से लंका में बौद्ध मत प्रचार करने के लिये बड़े बड़े भिक्षु (बौद्धसाधु) भेजे गये थे जिनमें अशोक की पुत्री भी थी। अशोक के प्रचार का लंका निवासी सिंहालियों पर भीषण प्रभाव पड़ा था और सिंहाली राजा तथा प्रजा सभी बौद्ध धर्म के अनुयायी हो गये थे। इसी काल से लंका बौद्ध धर्म का केन्द्र बन गया था। अब तक वह बौद्ध धर्म का प्रसिद्ध अनुयायी है।

———

चेट्टी

पेट्रोलियम स्टोरेज कम्पनी तथा सीलोन इंजीनियरिंग वर्क्स के आगे चलकर किले वाले मार्ग पर चेट्टी लोगों का निवास स्थान है। यह लोग भारतीय तट के निवासी हैं और लंका में कपड़ा, चावल का व्यापार करते हैं तथा रुपये का लेन देन करते हैं। इनका लेन देन लगभग उसी ढङ्ग का होता है जैसे कि हमारे भारत वर्ष के उत्तरी भाग में अफगानी आग़ा लोग करते हैं। चेट्टी लोग सिर मुँडाए रहते हैं और वस्त्र बहुत कम पहिनते हैं। यह लोग निर्भीक भाव से लेन-देन का काम करते हैं। यह अपने वचन के बड़े पक्के होते हैं और कहा जाता है कि इनके वचन दस्तावेज़ का काम करते हैं। चावल, कपड़ा तथा नारियल इनके व्यापार के मुख्य अंग हैं। चेट्टी लोग जब सिंहाली लोगों को रुपया ऋण देते हैं तो अपनी व्याज की रकम मूल-धन से पहले ही काट लेते हैं जैसे कि यदि १००) किसी को देना हैं और उसका व्याज २) है तो ऋण देने वाला १००) के स्थान पर ऋण लेने वाले को ९८) रु० ही देता है।

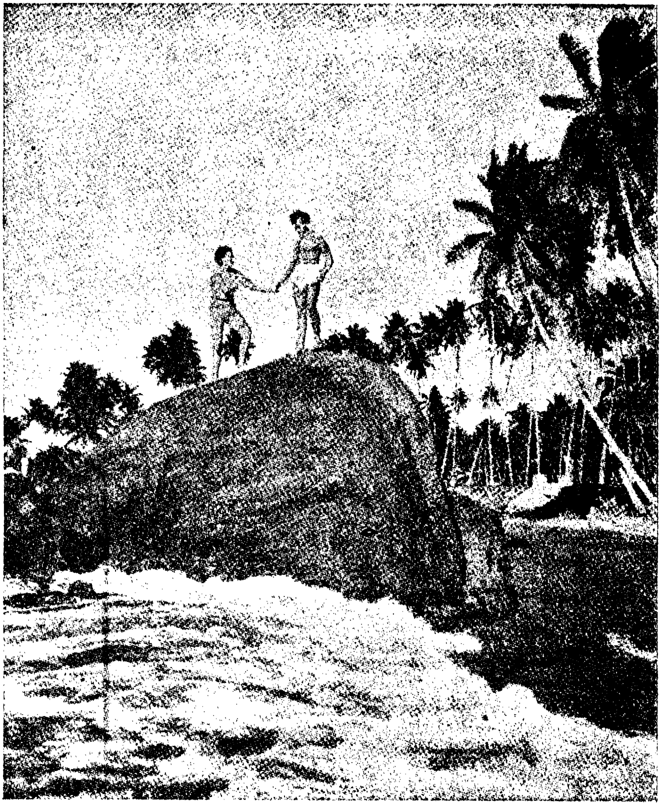
आदि निवासियों का जीवन

कोलम्बो के समीपवर्ती तथा गांव के आदि निवासियों का जीवन अब भी बड़ा सरल तथा सीधा सादा है। आदि निवासी लोग लकड़ी, मिट्टी तथा पत्ती और घास के बने हुये झोपड़ों में रहते हैं। नारियल, ताड़ आदि के वृक्षों की लकड़ी, पत्ती और फल का उपयोग यह लोग अधिक करते हैं। पहिले के वस्त्र अब भी यह लोग नारियल और ताड़ की पत्तियों का बनाते हैं। यह खेती भी करते हैं जिसमें धान की खेती मुख्य है। वन से उपलब्ध वस्तुओं, फलों तथा वृक्षों की पत्तियों छालों आदि से सामान तयार करने का रोज़गार इनका मुख्य पेशा है। प्राचीन भांति के अस्त्र जो लकड़ी और लोहे के बने होते हैं उन्हीं का यह प्रयोग करते हैं। योरुपीय निवासी इन लोगों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते हैं पर हमें न भूलना चाहिये कि उनकी अपनी संस्कृति ही अलग है। यह लोग भूत-पिशाच साकिनी-डाकिनी, चुड़ैल आदि बुरी आत्माओं में विश्वास करते हैं। मुसीबतों के आने पर बीमार होने पर यह इन्हीं बुरी आत्माओं से प्रभावित हो जाते हैं और उनको पूजा

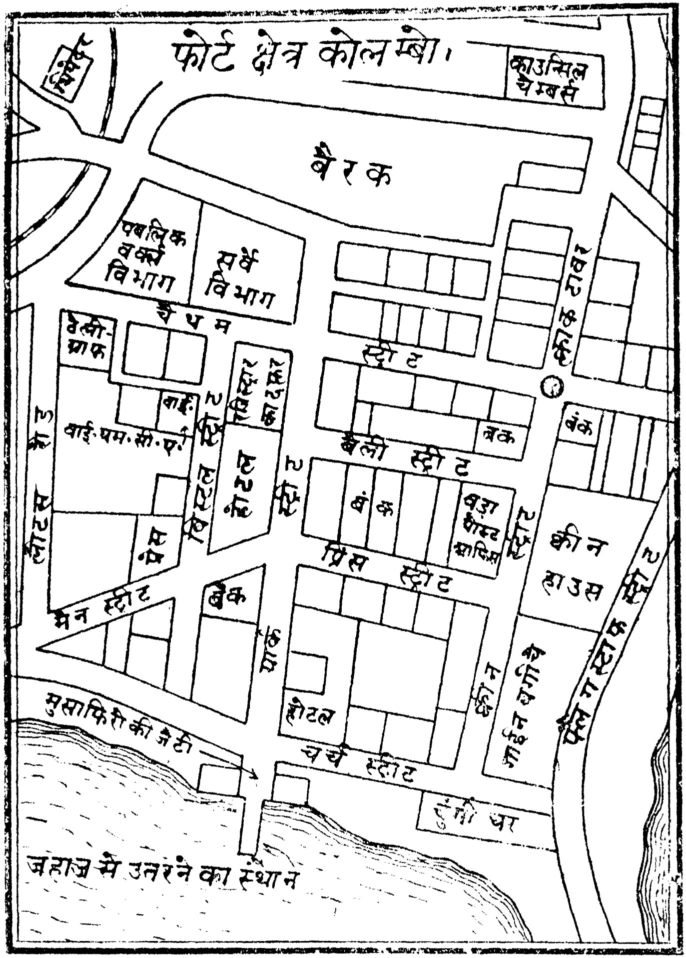
करते हैं जिससे प्रसन्न होकर यह आत्माएं उन्हें उनके संकटों से निवारण कर दें। ईश्वर की कृपा से उन्हें उनकी ऐसी पूजा से लाभ होता है। लाभ हो क्यों न महान दयालु ईश्वर उन्हें उसी रूप लाभ पहुँचाता है। यह लोग दवाओं और औषधियों तथा यंत्र-मंत्र का भी प्रयोग करते हैं। सिघाली लोगों में तामिल तिलगो जाति के लोग भी हैं जिनकी अपनी संस्कृति अलग है। लंका की आदि जातियों का रंग प्राकृतिक रूप से काला होता है। यह लोग सुडौल तो होते हैं पर नाटे होते हैं। द्वीप की अधिक उष्ण जलवायु का भीषण प्रभाव उनपर पड़ता है। इसी कारण उनकी भेष-भूषा के बदलने में देर लगती है।

भारतीय प्रभुत्व

कोलम्बो तथा अन्य द्वीपीय नगरों पर भारत का विशेष रूप से प्रभाव पड़ा है। प्रभाव पड़ना तो अनिवार्य है क्योंकि लंका भारत का ही एक अंग है। भारतीय व्यापारी तथा मज़दूरों का एक बड़ा समूह



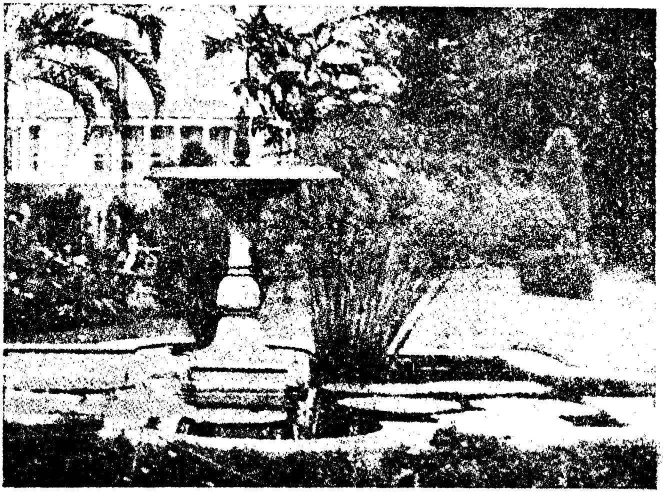
माउंट लवीनिया



फोर्ट-क्षेत्र, कोलम्बो



कोलम्बो के प्रसिद्ध मुहल्ले पेटा का एक दृश्य

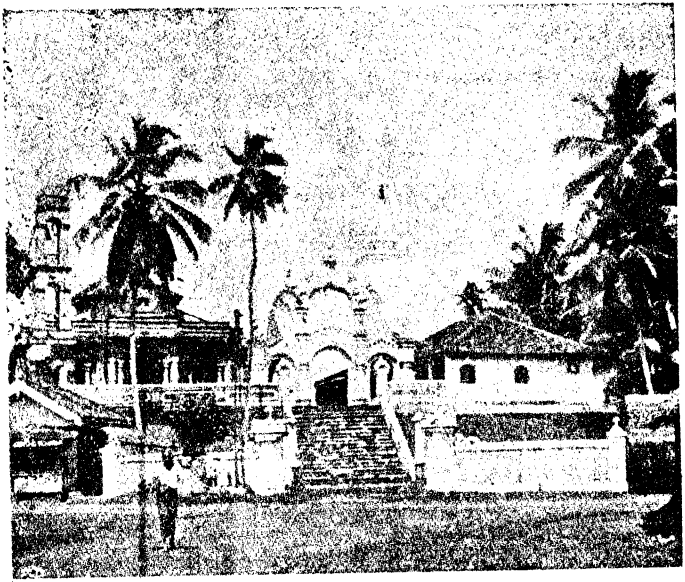


कोलम्बो का विक्टोरिया पार्क



फोर्ट (कोलम्बो) की सड़क का एक दृश्य

लंका द्वीप में हैं जो वहां के तटीय नगरों बन्दरगाहों आदि मुख्य स्थानों पर काम करता है।



केलानी का मन्दिर

जब भारत में कांग्रेस का प्रभुत्व बढ़ने लगा तो उसी की एक शाखा सीलोन में भी स्थापित हुई जो लंका की आजादी की लड़ाई लड़ने लगी। सीलोन में कांग्रेस के प्रभुत्व बढ़ने पर वहां और दूसरी संस्थायें

स्थापित हुईं जो राजनैतिक क्षेत्र में उतरीं और राजनैतिक अधिकार प्राप्त करने के लिये जोर पकड़ने लगीं। जब ब्रिटिश सरकार ने देखा कि सीलोन के



कोलम्बो के बन्दरगाह का एक दृश्य

निवासी भारतीय नेशनल कांग्रेस के अंतर्गत तेजी से अपना कदम आजादी की ओर बढ़ा रहे हैं तो उन्होंने बड़ी होशियारी के साथ गोलमेज़ परिषद् के पश्चात्

कोलम्बो-दर्शन

बरमा की भांति ही लंका को भी भारत से अलग कर दिया और विभिन्न प्रान्तों को कुछ अधिकार प्रदान कर



मुटवल का तट

दिये जिससे सिंहाली लोगों को सांस लेने का अवकाश मिला। इतने पर भी अंग्रेजों ने और चालें चलीं।

सिंहालियों को भारतियों के विरुद्ध वह भड़काने लगे पर लंका के निवासी कम चतुर नहीं हैं वे भुलावे में नहीं आये। संकट आने पर श्री अणे जो १६४० ई० में वाइसराय के कौंसिल के सदस्य थे लंका भारतीय सरकार की ओर से भारतीयों का सुरक्षा के लिये भेजे गये।

इतना ही नही पं० जवाहर लाल जी नेहरू को भी लंका।से निमंत्रण मिला और वे लंका गये वहां उनका बड़ा मान हुआ और उन्हें सिंहालियों ने मान-स्वरूप लाखों रुपये के सामान दिये।

विभिन्न संहर्षों के फलस्वरूप अब सीलोन में भी औपनिवेशक राज के अंतर्गत प्रतिनिध सभा का निर्माण हुआ। १६३६ ई० के पश्चात् युद्ध के कारण चुनाव नहीं हुआ पर इस वर्ष (१६४७ ई०) वहां सितम्बर मास में चुनाव होने को है। प्रतिनिध सभा में ६५ सीटें हैं। द्वीप ८६ भागों में चुनाव के लिये बंटा है।

चुनाव में संयुक्त राष्ट्रीय दल (यूनाइटेड नैशनल पार्टी) ने अपने प्रतिनिधि सभी स्थानों से खड़े किये हैं। इस दल के नेता मिस्टर डी० एस० सेननयाके हैं।

यह दल सीलोन राष्ट्रीय कांग्रेस, सीलोन मुसलिम लीग तथा नर्म तामिळ पार्टी को मिलाकर बनाया गया है। राष्ट्रीय दल का विरोध उत्तर के तामिल जिलों में तामिल दल कर रहा है। कम्यूनिस्ट तथा ट्राटस्को दल भी विरोध कर रहा है। सीलोन की भारतीय कांग्रेस को वहां के भारतीय मजदूरों का पूरा बल प्राप्त है अतः उसे ऊपरी भाग के सातों स्थानों पर विजय प्राप्त होने की आशा है।

भारतवर्ष को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हो जाने के फलस्वरूप आशा की जाती है कि शायद अब आगे कुछ ही वर्षों में लंका को भी आजादी प्राप्त हो जावेगी।

'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल २।)
२—भूतत्व १॥)
३—भूगोल एटलस १॥)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति १)
५—मिडिल भूगोल भाग १—४ मूल्य प्रत्येक भाग ।॥)
६—हमारा देश ॥=)
७—संक्षिप्त बालसंसार (नया संस्करण) १।)
८—हमारी दुनिया ॥)
९—देश निर्माता ॥)
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग ।)
११—सीधी पढ़ाई दूसरा भाग ।)
१२—जातियों का कोष ॥)
१३—अनोखी दुनिया ।॥)
१४—आधुनिक इतिहास एटलस १)
१५—संसार-शासन २।)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण) १।)
१७—स्पेन-अंक १)
१८—ईरान-अंक १)
१९—चीन-अंक १)
२०—चीन-एटलस ॥)
२१—टर्की १)
२२—अफ़ग़ानिस्तान १)
२३—भुवनकोष १)
२४—एबीसीनिया ।॥)
२५—गंगा-अंक १)
२६—गंगा-एटलस ॥)
२७—देशी राज्य-अंक २॥)
२८—पशु-पक्षी-अंक १)
२९—महासमर-अंक १।)
३०—महासमर एटलस ॥)
३१—सचित्र भौगोलिक कहानियां ॥)
३२—पशु-परिचय ॥)
३३—प्राचीन जीवन ॥)
३४—भूपरिचय (संसार का विस्तृत वर्णन) ३)
३५—मेरी पोथी ॥=)
३६—आसाम-अंक १)
३७—द्वितीय महासमर-परिचय १॥)
३८—संयुक्त प्रांत-अंक ३॥)
३९—महासमर दैनन्दिनी डायरी २)
४०—भारतीय भाषाएँ १)
४१—नागरिक दर्शन ॥=)
४२—मेरी पोथी ॥=)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय ककरहाघाट इलाहाबाद।

(शेष विषय सूची)

—o—